Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

निराला के काव्यों में प्रगतिशील चेतना

Amit Chahal*

Research Scholar, Department of Hindi, Maharishi Dayanand University, Rohtak

सार – *आज की कविता उन्नीसवीं सदी की कविता से अलग हो रही है। कविता का रूप, भाव, गेयता, अन्तर्गुण सबके सब परिवर्तित हुए हैं। गत एक सौ वर्षों में संसार, मनुष्य और उसका जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हुआ है। इस परिवर्तन की प्रतिबिंब उस कविता में भी दर्शनीय है। आधुनिक कविता के कुछ गुण इस प्रकार हैं।*

1. *काव्यात्मक भाषा का अभाव।*
2. *प्रतीक, तुक और छंद से छूट।*
3. *प्रतीकों का प्रयोग केवल सामान्य जीवन से ही होता है।*
4. *सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग।*
5. *प्रपंच के समस्त विषयों से हटकर केवल सामान्य परिकल्पनाओं के आधार पर विषय चुनाव।*
6. *मनोवैज्ञानिक प्रतीकों का प्रयोग।*
7. *दूसरी भाषाओं की शब्दावली, कहावतें आदि का प्रयोग।*

आधुनिक कविता के इन गुणों के आधार पर निराला काव्यों में प्रगतिशील चेतना की विवेचना करना है।

----------X----------

काव्य-प्रयोजन संबंधी व्यक्त धाराणाओं को सामने रखकर निराला ने अपनी प्रगतिशील कविताओं का प्रणयन किया। “निराला के काव्य में प्रगतिशील और प्रयोगशील तत्व तो आरंभ से ही विद्यमान थे।”[1] समाज-हित को लक्ष्य करने वाले कवि की अधिकांश कविताएँ प्रगतिशील तत्वों का उन्नायन करने वाली हैं। युग-चेतना से प्रेरित कवि ने रूढ़िवाद का खण्डन, ब्रिटिश शासन की दमन नीतियाँ, अछूत प्रथा, जातिवाद एवं सांप्रदायिकता, नारी विमोचन, आर्थिक असन्तुलन एवं शोषण से प्रेरित मज़दूर आन्दोलन एवं किसान आन्दोलन, नव साहित्यन्दोलन आदि प्रगतिशील तत्वों को अपनी कविताओं में विशेष महत्व दिया। निराला की छोटी बड़ी सारी कविताएँ जन-जीवन के उत्कर्ष के साधन के रूप में समर्पित थी। अतः कवि के रूप में निराला की देन का सही मूल्यांकन उनसे प्रस्तुत प्रगतिशील तत्वों के विवेचन से ही संभव है।

1. रूढ़िवाद का खण्डन

प्रगतिशील कवि निराला स्वभावतः क्रांतिकारी थे। वे पुरातनता के रूढ़िग्रस्त मार्गों के कट्टर शत्रु थे।[2] तत्कालीन जगत की परंपराओं, अंधविश्वासों और अनाचारों को वे पसंद नहीं करते थे। प्रगति के उन्नायक विशिष्ट तत्वों के आविष्कार एवं समर्थन कवि अपने जीवन का लक्ष्य मानते थे। निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा रूढ़िवाद के विरुद्ध प्रस्तुत कविताओं से ही प्राप्त हो सकता है। उद्‌बोधन, ध्वनि, बादल-राग, पास ही रे हीरे को खान, बापू के प्रति, भगवान बुद्ध के प्रति, क्या दुख दूर कर के बन्धन, तुलसीदास और सरोज-स्मृति में रूढ़िवाद की यथासंभव चर्चा हुई है, जो निराला के प्रगतिशील विचारों का सच्चा परिचय कराने वाले हैं।

‘उद्‌बोधन’ में प्राचीनता का ध्वंस करने का आह्‌वान है। निराला नव जीवन का पक्षपाती है। उनका यह आग्रह है कि

www.ignited.in

सदियों से बने रहने वाले अन्धविश्वास नष्टभ्रष्ट हो जाएं। वे चाहते हैं कि जीवन के आकाश और भूमि में एक नया सुगन्ध छा जाए। एक नूतन स्वर और ताल से दिशाएँ मुखरित हो जाएँ। जीर्ण-शीर्ण नियमों के अवशिष्ट तक लुप्तप्राय हो जाए। सदियों से जकड़े हृदय कपाट खुल जाए। निराला का यह आह्वान है:-

"छोड़, छोड़ दे शंकाएँ, रे निर्झर-गर्जित वीर!

उठा केवल निर्मल निर्घोष;

देख सामने, बना अचल उपलो को उत्पल, धीर!

प्राप्त कर फिर नीख सन्तोष।"[3]

कवि आशा करते हैं कि सारी शंकाएँ दूर हो जाएँ। देश के गौरव-गान से पृथ्वी एवं आकाश मुखरित हो उठे। यहाँ नवीनता एवं परिवर्तन के प्रति निराला का पक्षपात स्पष्ट किया गया है।

'ध्वनि' कविता में दुखियों एंव निराशा-पीड़ित लोगों में आशा भरा देना कवि का लक्ष्य है। इधर नये जीवन की आशा निहित है। प्रकृति में कवि एक मनोहर प्रत्यूष जगा पाते हैं। नींद का आलस्य एवं अकर्मण्यता रूढ़िगत प्रवृत्तियाँ हैं उनको त्यागकर भगवान की सहायता से नये प्रभात तक पहुँचना एक नवीन साधना है।

"मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण,

इसमें कहाँ मृत्यु

हे जीवन ही जीवन।

अभी पड़ा है आगे सारा यौवन;

स्वर्ग-किरण-कल्लोलो पर बहता रे यह बालक मन"[4]

नवीनता का ग्रहण करने पर नयी ध्वनि मुखरित हो जाएगी। अतः कवि की यह आशा है कि कभी न होगा मेरा अन्त।

'बादल राग' में पुरानी प्रथा से जन्य आलस्य को दूर करके नवीनता की वर्षा करने वाले बादल का संगीत प्रस्तुत हुआ है। कवि आशा करते हैं कि एक नया अमर राग आकाश में भर जाए।

'भगवान बुद्ध के प्रति' कविता में रूढ़िगत विद्वेष-भावना का त्याग करके राष्ट्रों के बीच में मैत्री और प्रेम की भावना को जाग्रत करने का प्रयास दिखाया गया है। राष्ट्र सबके सब वैज्ञानिक जड़ता पर गर्वित होकर सर्वनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। वैज्ञानिक साधन सुख के खिलौने हैं। जीवन का लक्ष्य पैसा कमाना बन गया है। वर्गों और राष्ट्रों के बीच संघर्ष चल रहे हैं। इस परिस्थिति में स्वार्थ त्याग कर और रूढ़ि से विमुख होकर सत्य की खोज में निकले बुद्ध का उदाहरण प्रस्तुत किया गया है -

"जैसे जीवन में निश्चित

विमुख भाग से, राजकुँवर, त्यागकर सर्वस्थित

एकमात्र सत्य केलिए, रूढ़ि से विमुख, रत

कठिन तपस्या में, पहुँचे लक्ष्य को, तथागत।"[5]

2. अछूत प्रथा

स्वार्थ एवं स्वाभिमान से प्रेरित मनुष्य अपने को दूसरों की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध करने की चेष्टा करते हैं। वर्णाश्रम-धर्म के बिगड़ जाने के कारण जातिगत उच्चनीचता भारतीय जनजीवन में स्थान पर चुकी थी। अठारहवीं सदी तक आते आते हिन्दू-समाज पर तांत्रिक नियमों का पालन करने की प्रथम रूढमूल हो गयी। परिणामस्वरूप चाण्डालों तथा निम्न जातिवालों के स्पर्श एवं सामाजिक संबन्ध से जातिगत श्रेष्ठता के गिर जाने का भय समाज में फैल गया।[6]

'प्रेमसंगीत' में कवि के ब्राह्मण का लड़का होने पर भी निम्न जातिवाली पनहारिन पर मुग्ध हो जाने का जीता-जागता वर्णन मिलता है। पनहारिन कोयल सी काली एवं मतवाली चालों से हीन होने पर भी उसके आचरण को देखकर कवि का दिल प्रेम से तड़प उठता है। प्रेम-भावना ही महत्वपूर्ण है और छुआछूत की प्रथा और रूढ़िगत अनाचार उसके सामने नहीं टिक सकते। कवि अपने हृदय का भावातिरेक यो प्रकट करते हैं -

"ले जाती है मटका-बडका

मैं देख-देखकर धीरज धरता हूँ।"[7]

निम्न जाति वाली पनहारिन से प्रेम-संबन्ध को मना करने वाली अछुत प्रथा को इधर कवि अपने आचरण से चुनौती देते हैं।

3. जातिवाद

निराला जी के युग में जातिवाद की पराकाष्ठा थी। सामाजिक एकता के अभाव से देश को विदेशियों की दासता स्वीकार

करनी पड़ी थी। जातिवाद के फलस्वरूप निम्न जाति में जन्में शूद्र को अंगीकार न मिलता था और समाज ने उसको हीन जाति का माना। यह वर्णाश्रम धर्म को बिगाड़कर 'जन्मकर्म विभागच्छ' मान लेने का दुष्परिणाम भी था। व्यक्तिगत गुण नहीं, जन्म की जाति ही श्रेष्ठता का आधार माना गया। राजा राममोहनराय ने इसको देश की एकता में भारी बाधा मान लिया था।[8] निराला जी ने अपनी 'प्रेमसंगीत' और 'गर्म पकौड़ी' मुक्तकों और 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', 'कुकुरमुत्ता', 'स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज' आदि लंबी कविताओं में भी यत्र-तंत्र जातिवाद का खण्डन किया है।

'प्रेमसंगीत' में छुआछूत की प्रथा एवं अस्पृश्यता को जातिवाद की उपज दिखायी गयी है। कवि ब्राह्मण का लड़का है, तो भी निम्नजातिवाली पनहारिन से व्याह करता है प्रभात में नियम से आने वाले पनहारिन कोयल-सी काली है, उसकी चाल मतवाली नहीं है। पनहारिन का व्याह नहीं हुआ है। उसे देखकर जाति की परवाह किये बिना कवि आहें भरता है और बार-बार देखकर प्यार करने की धीरज बाँधता है। यहीं प्रेम के सहज आर्कषण को जातिवाद के कठोर नियमों से अधिक महत्व दिय गया है। उतना ही नहीं, कवि ने यह स्थापित किया है कि जातिगत भेद-भावना प्रेम के क्षेत्र में मान्यता नहीं प्राप्त कर सकती।

अपनी प्रतीकात्मक कविता गर्म पकौड़ी में निरालाजी ने सुधारवादियों के पथ में बाधाएँ उपस्थित करने वाले निम्नजातिवालों को कटाक्ष किया। कवि कहते हैं-

"अरी तेरे लिये छोड़ी

बम्हन की पकायी

मैं ने घी की कचैड़ी।"[9]

ब्राह्मण की सहज श्रेष्ठता की उपेक्षा करने निम्नजातिवालों का उद्धार करने के लिए प्रयत्न किये गये। तेल की भुनी और नमक-मिर्च की मिली गर्म पकौड़ी जीभ को जला देती है। उसको दाढ के तले खाये बिना दबाकर रखना ही पड़ा। दिल लेने के बाद उसने कपड़े-सा फींचना ही चाहा। अतः कवि की यह निवेदन है कि हे निम्नजाति वाले, तुम अपने हितैषियों और सुधारकों का पूर्ण समर्थन करो और उनकी खुशी के लिए अपने को समर्पित करो। इससे इस निष्कर्ष हम निकाल सकते है कि निम्नजातिवालों के पूर्ण जागरण एवं सहयोग के बिना जातिवाद को हम भारतीय जन-जीवन से हटा नहीं सकते।

'तुलसीदास' कविता में निराला जी तुलसी के समकालीन भारतीय जन-जीवन पर प्रकाश डालते हैं। शूद्र निम्नजातिवाले समझे जाते थे। कवि रोते हैं कि वे समाज के लिए अभिशाप और कलंक माने जाने लगे थे।

4. नारी विमोचन

भारतीय संस्कृति में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान माना गया था। वह मा, रमा और मंगलदेवता समझी जाती थी।[10] बात ऐसी होनी पर भी पश्चात् काल में स्त्री का सामाजिक स्थान बुरी तरह गिर गया। मनुस्मृति में स्त्री के संरक्षण के सम्बन्ध में यह कथन मिलता है-

"पिता रक्षति कौमारे

भत्तृ रक्षति यौवने

रक्षति स्थविरे पुत्रा

न स्त्री स्वातंत्रयमर्हति।"[11]

इसके आधार पर स्मृतिकार को नारी स्वातंत्र्य के विरुद्ध घोषित करने का प्रयास हुआ है, जो बिल्कुल गलत है। स्मृतिकार ने वास्तव में स्त्री के हित एवं सुरक्षा के पालन का विशेष दायित्व लोगों को समझाना मात्र चाहा था। स्वातंत्र्य-पूर्व युग में भारतीय स्त्री को पुरुष की इच्छाओं का पालन करने वाला उपकरण मानने की प्रवृत्ति फैल गयी थी। स्वामी दयानन्द सरस्वती, राजा राममोहन राय, महादेव गोविन्द रानडे तथा एनी बसेंट ने भारतीय स्त्रियों की गरिमा बढ़ाने और उनको दबाकर रखने के लिए प्रचलित किये गए दुराचारों को हटाने का प्रयत्न किया।[12] सती, विधवा-विवाह-निषेध, देवदासी प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि के विरुद्ध इन सुधारकों ने आन्दोलन चलाया। महात्मा गाँधी ने स्वतंत्रता-आन्दोलन में स्त्रियों को भाग लेने का आह्वान किया, स्त्री पुरुष समता का समर्थन किया।[13] सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने तत्कालीन नारी-विमोचन आन्दोलन का पूर्णतः समर्थन किया। उन्होंने अपनी 'विधवा', 'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति', 'प्रेम संगीत', 'रानी और कानी' मुक्तकों और 'पंचवटी-प्रसंग' एवं 'सरोज-स्मृति' इन लंबी कविताओं में नारी की दुःस्थिति का जीता-जागता वर्णन यत्र-तत्र किया है।

"वह दुनिया की नज़रों से दूर बचाकर,

रोती है अस्फुट स्वर में,

दुख सुनता है आकाश धीर,

निश्चल समीर,

सरिता की वे लहरें भी ठहर-ठहरकर।

कौन उसको धीरज दे सके?

दुख का भार कौन ले सके?"[14]

कोई भी उसको धीरज देने और उसके आँसओं को पोंछने के लिए नहीं। कवि अंत में यह बता देते हैं कि सारा भारत उसके आँसुओं से तर गया है। इधर नारी-विमोचन की सार्थकता पर बल दिया गया है और कवि का यह पवित्र आग्रह है कि नारी-सुधार के प्रयत्न प्रशस्त हो जाएँ।

'सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति' कविता में कवि ने नारी के अनश्वर महत्व का गीत गाया है। उन्होंने धन के, मान के बाँध को जर्जर का अपूर्व विवके के द्वारा प्रणय का समर्थन करने वाले सम्राट का समर्थन किया है। चाहे विदेशी हो या स्वदेशी, श्वेतवाले हो या कृष्णवर्णवाले, मानव मानने को तैयार हैं। सम्राट विशाल ब्रिटिश साम्राज्य के सिंहासन पर आसीन थे, परन्तु वे उधर नही रह सके-

"बन्ध का सुखद भार भी सह न सके।

उर की पुकार

जो नव संस्कृति की सुनी।"[15]

वे सिंहासन छोड़कर साधारण मानव की तरह भूमि पर उतर पड़े और उन्होंन ब्रिटिश शासक संबन्धी नियमों को तोड़कर अपनी प्रेमिका का हाथ ग्रहण किया और उसे अपनी पत्नी बनायी। कवि एडवर्ड अष्टम की इस साहसिकतापूर्ण कदम पर अभिनन्दन करते हैं।

निष्कर्ष

अनुभूतियाँ कवि के मन में उत्पन्न होती हैं। वे कविता का रूप तब ग्रहण करती हैं, जब कवि के संस्कारों से मिलकर शब्दों के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। समाजहित एवं मानव-कल्याण को काव्य-साधना का लक्ष्य मानने वाले कवि निराला ने युग-चेतना से प्रेरित होकर प्रगतिशील तत्वों का विवेचन किया है। कवि के रूप में निराला का योगदान जनजीवन के उत्कर्ष के लिए प्रस्तुत ये प्रगतिशील विचार हैं।

उद्बोधन, ध्वनि, बादल-राग, पास ही रे हीरे की खाने, बापू के प्रति, भगवान बुद्ध के प्रति, क्या दुख दूर कर दे बन्धन, तुलसीदास और सरोज-स्मृति में रूढिवाद का खण्डन हुआ है। बापू के प्रति समर करो जीवन में, राजे ने अपनी रखवाली की, यमुना के प्रति, महाराज शिवाजी का पत्र आदि कविताओं में निराला ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अपनी आवाज उठायी है। सुधारवादी आन्दोलनों के बावजूद जो अछूत प्रथा समसामयिक समाज में चलती थी, उसकी आलोचना 'प्रेमसंगीत' स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज आदि कविताओं में कवि ने प्रस्तुत की है। निराला के समय में जातिवाद का बोलबाला था। प्रेमसंगीत, गर्म पकौडी, तुलसीदास, स्वामी प्रेमानन्दजी महाराज आदि कविताओं में निराला ने जातिवाद, का खण्डन करके विश्व-मानवता का समर्थन करने का प्रयास किया है। अपने समय के नारी विमोचन आन्दोलन का परिपूर्ण समर्थन निराला जी ने किया। विधवा, सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति प्रेमसंगीत, रानी और कानी, पंचवटी प्रसंग, सरोज-स्मृति आदि कविताओं में यद्यपि नारी की चिरंतन समस्याओं का व्यापक प्रतिपादन नहीं हुआ है, तो भी निराला जी ने यथासंभव नारी जीवन की समस्याओं को चर्चा की है। अनुदिन सचेत होने वाले भारतीय मजदूर आन्दोलन का जोरदार समर्थन निरालाजी ने अपनी 'अधिवास', 'प्रकाश', 'दीन' 'भिक्षुक', 'स्वप्न-स्मृति', 'समर करो जीवन में आदि मुक्तकों में किया है। निराला जी समसामयिक किसान आन्दोलन से प्रभावित थे। उन्होंने अपने हताश, सड़क के किनारे दुकान है, वेश-रूखे अधर-सूखे मुक्तक और कुकुरमुत्ता, 'देवी सरस्वती' जैसी लंबी कविताओं में इस आन्दोलन का जोरदार पक्ष लिया है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला नव साहित्यान्दोलन के अग्रदूत थे। उन्होंने भिक्षुक, तोडती पत्थर, विधवा, जुही का कली, दीन, अधिवास, उदबोधन, स्वप्न-स्मृति, ध्वनि आदि मुक्तकी और सरोज-स्मृति और कुकुरमुत्ता जैसी लंबी कविताओं में साधारण जन-जीवन से लिये गये प्रमेयों की चर्चा की है। राम की शक्तिपूजा, पंचवटी-प्रसंग, यमुना के प्रति और देवी सरस्वती पुराणेतिहासों पर आधारित हैं, तो भी इनके पात्र नवीन विचारों एवं नवयुग के समर्थक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. नंददुलारे वाजपेयी - 'कवि निराला', प्र. सं. 1965, पृ0 41

2. प्रो0 देशराज सिंह भाटी - 'निराला और उनकी अपरा' द्वितीय संस्करण, 1968, पृ0 13

www.ignited.in

3. 'निराला रचनावली' -1, पृ0 104

4. 'निराला रचनावली' -1, पृ0 127

5. 'निराला रचनावली'-1, पृ0 41

6. P.N. Chopra and other "Modern India", Volume III, Page 81

7. 'निराला रचनावली'-2, पृ0 35

8. P.N. Chopra and other "Modern India", Volume III, Page 101

9. 'निराला रचनावली'-2, पृ0 47

10. मणिकण्ठन नायर, 'प्रेमवुं स्त्री पुरुष संकल्पवुम' (मलयायम) 1996, पृ0 50

11. मनुस्मृति श्लोक 1999, अध्याय-9, श्लोक 3, पृ0 389

12. डॉ. बी.एम राजलक्ष्मी 'स्त्रीनीति' (मलयालम) दूसरा संस्करण, पृ0 103-104

13. साहित्य प्रवर्तक सहकरण संघम कोट्टयम 'स्त्री' पहला संस्करण, 1975, पृ0 45

14. 'निराला रचनावली'-1, पृ0 73

15. 'निराला रचनावली'-1, पृ0 229

Corresponding Author

Amit Chahal*

Research Scholar, Department of Hindi, Maharishi Dayanand University, Rohtak

amitchahal299@gmail.com